कथा सरिता

दुर्गुणों से बचने की राह

भगवान महावीर के अनेक शिष्य थे, जो उनसे कई गंभीर विषयों पर सार्थक चर्चा करते थे। ऐसी चर्चाओं से शिष्यों को ही लाभ प्राप्त नहीं होता था, बल्कि उनके द्वारा जनता के मध्य भी ज्ञान का प्रचार होता था। एक दिन महावीर स्वामी ने अपने शिष्यों से पूछा कि मनुष्य के पतन के क्या कारण हो सकते हैं? शिष्यों ने सोचा-विचारा। फिर किसी ने अहंकार बताया तो किसी ने काम वासना। किसी शिष्य का विचार था कि लोभ मानव के पतन का मूल कारण है तो कोई यह मानता था कि क्रोध इसकी जड़ है। सभी की बात सुनने के बाद महावीर ने कहा - मान लो कि मेरे पास एक कमंडल है, जिसमें काफी मात्रा में पानी समा सकता है। यदि उसे नदी में यों ही छोड़ दिया जाए तो क्या वह डूबेगा? शिष्यों ने इनकार में सिर हिलाया। महावीर ने पूछा - यदि उसमें छिद्र हो तो? शिष्यों ने कहा - तब वह अवश्य डूबेगा। महावीर ने पुन: प्रश्न किया - यदि छिद्र दाई ओर हो तो? तब एक शिष्य बोला - छिद्र दाई ओर हो या बाईं ओर, वह डूबेगा ही। तब महावीर ने समझाया - मानव जीवन भी उस कमंडल की तरह ही है। उसमें दुर्गुण रूपी छिद्र जहां हुआ, समझ लो वह डूबने वाला है। काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि में कोई भेद नहीं है। कथा का सार यह है कि दुर्गुण कोई भी हो, व्यक्ति का जीवन बर्बाद करने हेतु पर्याप्त है, क्योंकि उससे व्यक्ति की विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है और उसके निकट सम्बन्धी भी उससे दूरी बना लेते हैं।

जीवन का रहस्य

चीन के महान नेता माओत्से तुंग के जीवन से जुड़ी एक घटना है। उनके घर में एक बगीचा था। वह इतना मनोहर था कि लोग उसे रोजाना देखने आते थे। बगीचे की देखभाल माओत्से की माँ करती थी। एक बार माँ बीमार हो गई। बीमारी में भी माँ को स्वयं से अधिक बगीचे की चिंता थी। उन्हें लगता था कि खिले हुए फूल मुरझा न जायें। माँ की चिंता देख माओत्से तुंग ने बगीचे की देखरेख स्वयं आरंभ कर दी और माँ को आश्वस्त कर दिया कि फूल नहीं मुरझाएंगे। माँ के स्वस्थ होने तक माओ ने बगीचे की भरपूर देखभाल की, किंतु फूल मुरझा गए और बगीचा सूखने लगा। ठीक होने पर जब माँ बगीचे में आई तो यह देखकर बहुत दु:खी हुई। उन्होंने कहा - तूने बगीचे के पीछे अपने खाने-पीने की चिंता नहीं की। फिर यह कैसे हो गया? माओ बोले - मैंने तो एक-एक पत्ते की धूल झाड़ी, एक-एक फूल पर पानी छिड़का फिर भी न जाने क्यों बगीचा सूख गया। तब माँ ने माओ को प्रेम से गले लगाते हुए कहा - मेरे बच्चे फूलों के प्राण उसकी जड़ों में होते हैं। फिक्र जड़ों की करनी पड़ती है, पत्तियों और शाखाओं की नहीं। माओ ने पूछा - जड़ें कहां होती हैं माँ? माँ ने कहा - जड़ें जमीन के भीतर होती है, इसलिए दिखाई नहीं देती, किंतु उनके पोषण से ही पौधा बढ़ता है क्योंकि वही पौधे की नींव होती है। माँ की इसी बात से आगे चलकर माओत्से ने यह जीवन दर्शन समझा कि जीवन बाहर कहीं नहीं है। वह अपने ही भीतर होता है। सार यह है कि आवश्यकता केवल अंतर्यात्रा की है, जिससे जीने के सूत्रों को सही ढंग से समझा जा सके।

मनोविकारों से बचें

एक संत थे। उनके पास प्रतिदिन एक चोर आया करता था और ईश्वर के दर्शन करने के उपाय पूछता था। संत भी हमेशा यह कहकर उसे टाल देते थे कि समय आने दो बताऊंगा।

एक बार चोर ने बहुत आग्रह किया कि अब तो ईश्वर के दर्शन करने का उपाय बता दीजिए। वे बोले, 'सामने पहाड़ की जो ऊंची चोटी है वहां तक तुम सिर पर छह पत्थर लेकर चढ़ो। तब मैं तुम्हें ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताऊंगा।' चोर संत की बात मान गया। संत ने उसे अपने पीछे चलने का संकेत किया और खुद आगे चलते गए। सिर पर पत्थर लेकर चढ़ता चोर काफी दूर तक जाने पर थक चुका था। उसने कहा, 'भगवन्! अब नहीं चला जाता, मैं थक चुका हूँ। आगे बढ़ना मुश्किल हो गया है।' संत ने कहा, 'ठीक है। एक पत्थर फेंक दो।' यह क्रम तब तक चलता रहा, जब तक संत ने चोर के सिर से छहों पत्थर न फिकवा दिए। जब जाकर चोर ऊपर चोटी तक पहुंचने में सफल हो गया।

चोटी पर पहुंचकर संत ने उसे समझाया, 'भाई! जिस प्रकार तुम सिर पर भारी पत्थर लेकर चढ़ने में असफल रहे, उसी प्रकार जीवन में मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद जैसे मनोविकारों का बोझ ढोकर ईश्वर-दर्शन नहीं कर पाता है। ईश्वर-दर्शन के लिए इन सभी मनोविकारों का बोझ उतारना अनिवार्य है। बिना यह बोझ उतारे ईश्वर के दर्शन होना असंभव है।' इस उदाहरण से यह बात चोर की समझ में आ गई।

परिश्रम का महत्व

एक बार गुरु गोबिंद सिंह कहीं जा रहे थे। शिष्य उनके अमृत वचनों को पूर्ण एकाग्रता से सुन रहे थे। जब चर्चा समाप्त हो गई तो गुरु गोबिंद सिंह को प्यास लगी। उन्होंने अपने शिष्य से कहा - कोई पवित्र हाथों से मेरे लिए पानी ले आए। एक शिष्य तत्काल गया और चांदी के पात्र में निर्मल जल ले आया। गुरु गोबिंद सिंह ने पात्र लेते हुए शिष्य की हथेली की ओर देखा और बोले - वत्स! तुम्हारे हाथ तो बड़े कोमल हैं। गुरु की यह बात सुनकर शिष्य बड़ा प्रसन्न हुआ। वह गर्व भरी वाणी में बोला - गुरु देव, मेरे हाथ इसलिए कोमल हैं, क्योंकि मुझे कोई श्रम नहीं करना पड़ता। मेरे यहां बहुत सारे नौकर हैं। उनसे जो कहता हूँ, फौरन कर देते हैं। गुरु गोबिंद सिंह का हाथ पात्र को होठों तक ले जाकर ही रुक गया और वे बोले - वत्स, जिस हाथ ने कभी कोई सेवा नहीं की, कभी कोई काम नहीं किया, मजदूरी से जो मजबूत नहीं हुआ और जिसकी हथेली में मेहनत करने से गांठ नहीं पड़ी, उस हाथ को पवित्र कैसे कहा जा सकता है? पवित्रता तो सेवा और श्रम से ही प्राप्त होती है। क्षमा करना वत्स, मैं तुम्हारे हाथ का पानी नहीं पी सकता। यह कहकर गुरु गोबिंद सिंह ने पात्र नीचे रख दिया। गुरुदेव के वचनों से शिष्य को ज्ञान का बोध हुआ और उसने उसी क्षण परिश्रमी बनने का संकल्प लिया। कथा का सार यह है कि परिश्रम से कमाया गया धन पुण्यदायी होता है और आत्मिक शांति प्रदान करता है, इसलिए आलस्य का त्यागकर परिश्रम को अपनी प्रवृत्ति का स्थायी अंग बना लेना चाहिए।

सोलापुर। श्री श्री रविशंकर से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सोमप्रभा।

नाभा (पंजाब)। ब्र.कु.प्रवीण व ब्र.कु.हरप्रीत को मोमेन्टों देकर सम्मानित करते हुए अकाली दल के सदस्य ग्रीमा जी एवं स्कूल के प्रिंसीपल नीशी जलोटा।

रूड़की (आदर्श नगर)। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एन.आई.एच के निदेशक आर.डी.सिंह, योजना आयोग के सदस्य दिनेश मधुकर, एडवोकेट ब्र.कु.कल्याण सिंह, ब्र.कु.सूर्य, ब्र.कु.लक्ष्मीचंद तथा अन्य।

रामा मण्डी (वठिण्डा)। 'उज्ज्वल भारत के लिए युवा जागृति' प्रोजेक्ट का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.एम. गुरमीत सिंह, डॉ.एम.पी.सिंह, सुमन वांसल, ब्र.कु.मधु तथा अन्य।

झाड़ेश्वर (भरूच)। 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जयेश, ब्र.कु.प्रभा तथा अन्य।

सम्बलपुर। आनंद मार्ग आश्रम के श्रीनिवास जी बाबा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पार्वती।